THE HERALD of Christian Science
informal translations from the publications of the Christian Science Publishing Society

विद्रोह करो!
Rebel !

Author – Jenny Sawyer

Christian Science Sentinel Volume 117, Issue 48, Nov 30, 2015

"मैं कॉलेज जाने के लिए इन्तज़ार नहीं कर सकती," मेरी सहेली ने मुझे कहा। "फिर मैं वही कर सकती हूँ जो कुछ भी मैं करना चाहती हूँ।"

"जैसे क्या?" मैंने पूछा।

उसने दूर तक एकटक देखा जैसे कि सुहावनी सम्भावनाओं के बारे में इच्छा कर रही हो। परन्तु जब उसने मुड़कर मुझे देखा, उसकी नज़रो में संदेह की एक झलक थी।

"मुझे नहीं पता," उसने जवाब दिया।

वो शायद अपनी हिचकिचाहट में अकेली हो, पर वह अपने आप को परिवर्तित करके नवीनता लाने की चाह में अकेली नहीं थी। मेरी उच्च विद्यालय की उम्र की सहेलियों में से एक और अपने बालों को कसके बांध कर लटें बनाने के बारे में सोच रही थी। और एक अन्य ने मुझे बताया वह अपने व्यक्तित्व को कुछ इस तरह से व्यक्त करने का सोच रही थी कि "मेरे माता–पिता अचम्भित हो जाएं–चाहे थोड़े से ही।"

एक सामान्य विषय 'विद्रोह'। खुद को पुन:परिभाषित करने की चाह, या नियमों और सत्ता का विरोध करना। और, असल में, दुनिया को इस तरह के लोगों की आवश्यकता है। विद्रोही काम करवा लेते हैं। विद्रोह प्रथा को चुनौती देते हैं और निष्क्रिय व्यवस्था का तख्ता पलट देते हैं।

समस्या यह है कि हममें से अधिकतर अन्ततः विद्रोह को जिस तरह परिभाषित करते हैं–गुदवाना, छिदवाना, पार्टी करना–केवल दूसरी भीड़ में हिस्सा बनने का एक तरीका है। वास्तव में विद्रोह करने के लिए, आपको कुछ हट कर सोचना पड़ेगा–और काम करना पड़ेगा।

वह सब कैसा दिखाई देता है? अच्छा उस व्यक्ति के बारे में क्या कहोगे जिसने सत्ता को झुका दिया और जो खोखली प्रथाओं को सहन नहीं करता था? उसका जीवन विद्रोह की परिभाषा था–और इसने सब कुछ बदल दिया।

सम्भवतः क्राइस्ट जीसस आपके परम्परागत विद्रोही जैसे न दिखते हों। परन्तु उस सब में जो उन्होंने कहा और किया, वे अत्याचारपूर्ण सत्ता, प्रथा, यहाँ तक कि अपने पारिवारिक इतिहास की सीमाओं के विरूद्ध संघर्ष कर रहे थे। उनके द्वारा पापियों के उद्धार से उन्होंने धार्मिक कानून को नई परिभाषा दी। और जब उन्होंनें बीमार का उपचार किया तथा लोगों को मृत्यु से जगाया, उन्होंने असल में अपने अनुयायिओं की वास्तविकता की समझ को झिंझोड़ा–उन दीवारों को गिराते हुए जो हमें विद्यमानता की एक भौतिक, सीमित रूपरेखा में बंद कर सकती हैं।

---

* जो शब्द बड़े अक्षरों में लिखे गये हैं वह परमेश्वर के समानार्थक शब्द हैं।

For this translation in English and other translations in [Hindi], please see http://translations.christianscience.com

Translation © 2016 The Christian Science Publishing Society
This translation has been performed by Mother Church members in the Field and made available by agreement with The Christian Science Publishing Society. You may reproduce up to 50 print copies of this Article. You may not sell or reprint this Article in another publication without permission of CSPS. You may not post or embed this Article on other websites; instead please link to the Article on the CSPS website.

जीसस ने ब्रह्माण्ड की हमारी धारणा को एकदम स्पष्ट किया, यह दर्शाते हुए कि यह आत्मा–रचित है एवं पूर्ण रूप से आध्यात्मिक तथा अच्छा है। उन्होंने हर तरह के लेबल–निर्बल, अपवित्र, बहुत छोटा, बहुत बूढ़ा–को काट दिया, तथा हमारे व्यक्तित्व का एक अद्भुत, एकदम विमुक्त दृष्टिकोण प्रस्तुत किया: कि स्वर्ग का साम्राज्य, अर्थात् हर एक शानदार, परमेश्वर द्वारा प्रतिबिंबित गुण, हम सब में है। वह आनन्द, आत्मविश्वास, सेहत को सम्मिलित करता है–जो कुछ भी हमें चाहिए।

मुझे वह पसन्द है जिस तरह से मेरी बेकर ऐडी ने जीसस के विद्रोह को समझा जब उन्होंने साँयस एण्ड हैल्थ विद् की टू द स्क्रिप्चर्स में इसके बारे में लिखा: "जीसस ने इन्द्रियों की प्रमाणित गवाही के विरूद्ध, पाखंडी पंथो तथा क्रियाओं के विरूद्ध निडरतापूर्वक कार्य किया और उन्होंने अपनी उपचारक शक्ति से सभी विरोधियों को झूठा ठहराया। (पृष्ठ 18)

अपने समय के जीवन के परम्परागत क्रिश्चियन दृष्टिकोण के विरूद्ध विद्रोह करते हुए उन्होंने (मेरी बेकर ऐडी) स्वयं उनके (जीसस) पद–चिन्हों का अनुसरण किया। जैसे कि, यह मत कि यहां और अभी हम भौतिक हैं, वास्तव में परमेश्वर से पृथक परन्तु मृत्यु के उपरान्त, हम अन्ततः स्वर्ग पहुँच जाएंगे: परमेश्वर के साथ आध्यात्मिकता तथा एकजुटता में।

श्रीमती ऐडी के जीवन के कार्य व्यापक रूप से मानी जाने वाली उस धारणा को "स्पष्ट न" कहने के बारे में थे, तथा उसके बजाए हमारी वर्तमान आध्यत्मिकता को स्वीकृति देने के करने के बारे में। तथा जीसस की तरह, उन्होंने दोनों "अपने विरोधियों को झूठा भी ठहराया"और साथ ही साथ जो उन्होंने सिखाया उसे उपचार के द्वारा प्रमाणित किया। न केवल पूर्ण रूप से स्थापित धर्मशास्त्र के विरूद्ध अपितु उस समाज को विरूद्ध खड़े होने के लिए अत्यंत साहस चाहिए था जिसने कहा कि एक स्त्री सम्भवतः एक विश्वव्यापी धार्मिक आन्दोलन की स्थापना तथा नेतृत्व नहीं कर सकती थी।

विद्रोही काम करवा लेते हैं

परन्तु उन्होंने प्रतिकूल मत रखने वालों के विरूद्ध विद्रोह किया, और ऐसा करने से, उन्होंने हमें आज विद्रोही बनने का एक चिन्हित रास्ता दिया। मैं क्रिश्चियन साँयस को विद्रोह के एक सर्वश्रेष्ठ मार्ग के रूप में मानना पसंद करती हूँ–क्योंकि यह हमें उसे चुनौती देने की अनुमति देती है जिसे शेष संसार तथ्य के रूप में स्वीकार करता है। उदाहरण के तौर पर, कि बीमार होना निश्चित है। या कि जीवन के कुछ पहलुओं में, आप कभी भी सक्षम नहीं हो सकते। इसके बारे में क्या कहोगे कि आपका अतीत आपके वर्तमान तथा भविष्य को निश्चित करता है? या कि आप हालात या आकस्मिक विपदा के शिकार हो सकते हो।

हमारे जीवन का हर पल हमें एक ऐसे तरीके से सोचने के अवसर देता है जो केवल भीड़ का अनुसरण करने वाला न हो। और हाँ–इसके लिए साहस तथा निडरता की आवश्यकता होती है। विश्वास की भी। परन्तु हम विद्रोह कर सकते हैं और परिणामस्वरूप अद्भुत स्वाधीनता को देख सकते हैं। इस तरह से: "हमें यथार्थवाद की गहराई में देखना होगा, चीजों की केवल ऊपरी समझ को स्वीकार करने के बजाए" (साँयस एण्ड हैल्थ, पृष्ठ 129)।

यह वही था जो मुझे कॉलेज में करना था जब मेरी मंजिल पर सभी फ्लू से ग्रस्त होना शुरू हुए। इस कष्टदायक जमघट में न फँसना कठिन था। परन्तु मैं अपने क्रिश्चियन साँयस के अध्ययन से जानती थी कि "यथार्थवाद की गहराई" में देखना–दूसरे शब्दों में, संक्रमण के सम्मोहित करने वाले दृश्य से परे हटना–सहायता के लिए सर्वश्रेष्ठ रास्ता था।

Translation © 2016 The Christian Science Publishing Society
This translation has been performed by Mother Church members in the Field and made available by agreement with The Christian Science Publishing Society. You may reproduce up to 50 print copies of this Article. You may not sell or reprint this Article in another publication without permission of CSPS. You may not post or embed this Article on other websites; instead please link to the Article on the CSPS website.

इसलिए मैंने सरलता से कुछ करते हुए विद्रोह किया: मैंने बिल्कुल वहीं **परमेश्वर**, अच्छाई की सर्व–शक्तिशाली विद्यमानता को स्वीकार किया जहाँ कष्ट दिखाई दे हो रहा था। मैंने इस विचार को मानने से इन्कार किया कि बुराई के कानून होते हैं जो हमारी सेहत तथा कुशलता को प्रभावित कर सकते थे। मैंने हम सब के लिए **परमेश्वर** के प्रेम तथा **उसकी** देखभाल को समझने के लिए प्रार्थना की

मैं अपनी पूरी मंजिल पर हुए उपचार का श्रेय नहीं लूँगी। परन्तु जब मैंने विद्रोह शुरू किया कुछ दिलचस्प घटित हुआ। फ्लू के लक्षणों के बारे में बातचीत कम होती गई। लोग बीमार होने बंद हो गए। और जो बीमार हुए थे वे जल्दी ही स्वस्थ हो गए।

सम्भवत: यह कहना स्पष्ट रूप से दर्शाता है कि इस विद्रोह से न केवल मेरे दोस्तों को व्यवहारिक परिणाम मिले; इसने मुझे भी सशक्त होने का अहसास कराया। इसने मुझे उस प्रकार के नियम तोड़ने के प्रति और अधिक निष्ठावान होने में सहायता की जो कि बदलाव लाता है– नियम तोड़ना जो उपचार करता है।

क्रिश्चियन साँयटिस्ट होने के नाते, हम में विद्रोह स्वभाविक रूप से आना चाहिए। इससे भी अच्छा इसके प्रभाव तीव्र तथा प्रत्यक्ष होने चाहिए। इसलिए आगे बढ़ो और विद्रोह करो। यदि आप इसे सही ढंग से करते हो, आप दुनिया को बदलने में सहायता कर सकते हो।

Translation © 2016 The Christian Science Publishing Society
This translation has been performed by Mother Church members in the Field and made available by agreement with The Christian Science Publishing Society. You may reproduce up to 50 print copies of this Article. You may not sell or reprint this Article in another publication without permission of CSPS. You may not post or embed this Article on other websites; instead please link to the Article on the CSPS website.